Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 17/March/2026 **IJRAW:** 2026; 5(5):113-118 **Accepted:** 30/April/2026

कल्याणकारी राज्य की अवधारणा और भारतः कार्ल मार्क्स और हेरोल्ड लास्की के परिप्रेक्ष्य में एक आलोचनात्मक अध्ययन

***[1]सुशील कुमार बसवाल**

*[1]सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एसआरएम गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, सिकराय, दौसा, राजस्थान, भारत।

सारांश

यह शोध–पत्र कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का समग्र एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें विशेष रूप से कार्ल मार्क्स और हेरोल्ड लास्की के वैचारिक दृष्टिकोणों को आधार बनाया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि कल्याणकारी राज्य का उद्भव औद्योगिक क्रांति के पश्चात उत्पन्न सामाजिक, आर्थिक असमानताओं के परिप्रेक्ष्य में हुआ, जहाँ राज्य की भूमिका केवल शासकीय नियंत्रण तक सीमित न रहकर जनकल्याण के क्षेत्र में विस्तारित हुई। मार्क्स के अनुसार, राज्य वर्गीय शोषण का उपकरण है और कल्याणकारी नीतियाँ पूंजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने का माध्यम हैं, जबकि लास्की राज्य को एक उत्तरदायी संस्था मानते हैं, जो सामाजिक न्याय, समानता और नागरिकों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने में सक्षम है। इस प्रकार, शोध में इन दोनों विचारकों के दृष्टिकोणों के माध्यम से कल्याणकारी राज्य की वैचारिक संरचना और उसकी सीमाओं का गहन विश्लेषण किया गया है।

भारतीय संदर्भ में यह अध्ययन यह दर्शाता है कि संविधान द्वारा स्थापित आदर्शों, न्याय, स्वतंत्रता और समानता, के आधार पर भारत ने एक कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना को अपनाया है, जिसका प्रतिबिंब विभिन्न नीतियों और योजनाओं में देखा जा सकता है। तथापि, व्यावहारिक स्तर पर इन नीतियों के क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँकृजैसे असमानता, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता और संसाधनों का असमान वितरणकृइस अवधारणा की पूर्ण सफलता में बाधक बनती हैं। इस संदर्भ में कार्ल मार्क्स की आलोचनात्मक दृष्टि आंशिक रूप से प्रासंगिक सिद्ध होती है, जबकि हेरोल्ड लास्की का व्यावहारिक दृष्टिकोण राज्य की सकारात्मक भूमिका को रेखांकित करता है। निष्कर्षतः यह शोध इस बात पर बल देता है कि भारत में कल्याणकारी राज्य एक गतिशील और विकसित होती प्रक्रिया है जिसकी प्रभावशीलता के लिए पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और समावेशी विकास की दिशा में निरंतर सुधार आवश्यक हैं।

मुख्य शब्दः कल्याणकारी राज्य, सामाजिक न्याय, वर्ग संघर्ष, लोकतांत्रिक समाजवाद, भारतीय संविधान, आर्थिक असमानता, राज्य की भूमिका, समावेशी विकास।

प्रस्तावना

कल्याणकारी राज्य (Welfare State) आधुनिक राजनीतिक चिंतन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसका मूल उद्देश्य राज्य को केवल कानून और व्यवस्था बनाए रखने वाली संस्था से आगे बढ़ाकर नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का सक्रिय साधन बनाना है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात उत्पन्न असमानताओं, श्रमिकों के शोषण और पूंजीवादी व्यवस्था की विसंगतियों ने इस विचार को जन्म दिया कि राज्य को हस्तक्षेप कर समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान हेतु नीतियाँ बनानी चाहिए। इसी संदर्भ में कार्ल मार्क्स ने राज्य को शासक वर्ग का उपकरण मानते हुए यह तर्क दिया कि कल्याणकारी नीतियाँ वस्तुतः पूंजीवादी व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने का माध्यम हैं न कि वास्तविक समानता स्थापित करने का उपाय। दूसरी ओर हेरोल्ड लास्की ने राज्य को जनकल्याण का माध्यम मानते हुए यह प्रतिपादित किया कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत राज्य को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, ताकि वास्तविक स्वतंत्रता और समानता सुनिश्चित की जा

***Corresponding Author:** सुशील कुमार बसवाल

सके। इस प्रकार, कल्याणकारी राज्य की अवधारणा दो विपरीत लेकिन परस्पर पूरक दृष्टिकोणों के बीच विकसित होती है एक ओर आलोचनात्मक मार्क्सवादी दृष्टि और दूसरी ओर उदारसमाजवादी लास्की का दृष्टिकोण।

भारतीय संदर्भ में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यहाँ सामाजिक, आर्थिक असमानताएँ, जातिगत विभाजन और क्षेत्रीय विषमताएँ ऐतिहासिक रूप से गहराई तक विद्यमान रही हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने अपने संविधान में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के आदर्शों को स्थापित करते हुए एक कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना को अपनाया जिसका स्पष्ट प्रतिबिंब नीति निदेशक तत्वों में देखा जा सकता है। भारतीय राज्य ने शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन तथा गरीबी उन्मूलन हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की हैं जो लास्की के विचारों के अनुरूप राज्य की सक्रिय भूमिका को दर्शाती हैं। तथापि, व्यावहारिक स्तर पर इन नीतियों के क्रियान्वयन में भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमताएँ और संसाधनों के असमान वितरण जैसी समस्याएँ भी सामने आती रही हैं जो कहीं न कहीं कार्ल मार्क्स की उस आलोचना को बल देती हैं कि राज्य अंततः शक्तिशाली वर्गों के हितों की रक्षा करता है। इस प्रकार, भारत में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा एक मिश्रित स्वरूप में विकसित हुई है जहाँ हेरोल्ड लास्की के व्यावहारिक दृष्टिकोण और कार्ल मार्क्स की आलोचनात्मक चेतना दोनों ही इसकी प्रकृति और सीमाओं को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

साहित्य समीक्षा

कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि यह विषय मुख्यतः उदारवाद, समाजवाद और मार्क्सवाद की वैचारिक बहसों के केंद्र में रहा है। कार्ल मार्क्स ने अपने ग्रंथों, विशेषकर दास कैपिटल में, राज्य को वर्गीय प्रभुत्व का उपकरण माना और यह प्रतिपादित किया कि कल्याणकारी नीतियाँ पूंजीवादी व्यवस्था की अंतर्निहित असमानताओं को छिपाने का माध्यम हैं। उनके अनुसार, राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी योजनाएँ श्रमिक वर्ग को तात्कालिक राहत तो देती हैं, परंतु शोषण की संरचना को समाप्त नहीं करतीं। इसके विपरीत, हेरोल्ड लास्की ने Grammar of Politics जैसे ग्रंथों में कल्याणकारी राज्य का समर्थन करते हुए यह तर्क दिया कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में राज्य को सामाजिक न्याय, समान अवसर और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। लास्की के अनुसार, राज्य केवल न्यूनतम शासन तक सीमित न रहकर एक उत्तरदायी संस्था के रूप में कार्य करता है जो नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारने का दायित्व वहन करता है। इस प्रकार, साहित्य में एक ओर मार्क्स की आलोचनात्मक दृष्टि है, तो दूसरी ओर लास्की का व्यावहारिक और सुधारवादी दृष्टिकोण, जो कल्याणकारी राज्य की वैधता और आवश्यकता को स्थापित करता है।

भारतीय संदर्भ में साहित्य समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि अनेक विद्वानों ने संविधान, नीति निदेशक तत्वों और विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का विश्लेषण किया है। भारतीय संविधान के प्रावधानों को लास्की के लोकतांत्रिक समाजवाद के निकट माना गया है जहाँ राज्य सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही, समकालीन अध्ययनों में यह भी दर्शाया गया है कि भारत में कल्याणकारी नीतियों के बावजूद आर्थिक असमानता, गरीबी और सामाजिक विषमताएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई हैं जिससे कार्ल मार्क्स की आलोचनात्मक व्याख्या को आंशिक समर्थन मिलता है। कई शोध यह इंगित करते हैं कि कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन अक्सर राजनीतिक हितों, प्रशासनिक अक्षमताओं और संसाधनों की असमान उपलब्धता से प्रभावित होता है। वहीं कुछ अन्य अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में राज्य की सक्रिय भूमिका ने सकारात्मक परिवर्तन भी किए हैं जो हेरोल्ड लास्की के विचारों की प्रासंगिकता को सिद्ध करते हैं। इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य भारत में कल्याणकारी राज्य को एक मिश्रित और विकसित होती प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है जिसकी सफलता और सीमाएँ दोनों ही विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोणों के माध्यम से समझी जा सकती हैं।

शोध समस्या

कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को आधुनिक लोकतांत्रिक शासन की आधारशिला माना जाता है, किंतु इसके वास्तविक स्वरूप, उद्देश्य और प्रभावशीलता को लेकर गहन वैचारिक मतभेद विद्यमान हैं। एक ओर कार्ल मार्क्स का मत है कि राज्य मूलतः शासक वर्ग के हितों की रक्षा करता है और कल्याणकारी नीतियाँ केवल पूंजीवादी व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने का माध्यम हैं जबकि दूसरी ओर हेरोल्ड लास्की राज्य को एक उत्तरदायी संस्था मानते हैं जो सामाजिक न्याय, समानता और जनकल्याण सुनिश्चित कर सकती है। भारतीय संदर्भ में यह समस्या और जटिल हो जाती है, क्योंकि संविधान में कल्याणकारी राज्य की स्पष्ट प्रतिबद्धता के बावजूद व्यावहारिक स्तर पर गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता और संसाधनों का असमान वितरण अब भी व्यापक रूप से विद्यमान है। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या भारत में कल्याणकारी राज्य वास्तव में अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पा रहा है या यह केवल नीतिगत स्तर तक सीमित रह गया है। अतः यह शोध इस मूल समस्या की पड़ताल करता है कि भारत में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा किस हद तक प्रभावी और वास्तविक है तथा इसे समझने में मार्क्स और लास्की के दृष्टिकोण किस प्रकार सहायक या सीमित सिद्ध होते हैं।

मुख्य विचार

इस शोध में सैद्धांतिक ढांचा एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, क्योंकि इसके माध्यम से कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोणों के संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाता है। विशेष रूप से कार्ल मार्क्स और हेरोल्ड लास्की के विचार इस अध्ययन के मूल आधार हैं, जो राज्य, समाज और अर्थव्यवस्था के पारस्परिक संबंधों की भिन्न–भिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं। जहाँ मार्क्स राज्य को वर्गीय शोषण का उपकरण मानते हैं और कल्याणकारी नीतियों को पूंजीवाद के संरक्षण का माध्यम बताते हैं, वहीं लास्की राज्य को सामाजिक न्याय और समानता स्थापित करने वाली एक सक्रिय संस्था के रूप में देखते हैं। इस प्रकार, यह सैद्धांतिक ढांचा न केवल इन दोनों विचारकों के दृष्टिकोणों का विश्लेषण करता है बल्कि उनके माध्यम से भारतीय संदर्भ में कल्याणकारी राज्य की प्रकृति, सीमाओं और संभावनाओं को समझने का एक समग्र आधार भी प्रदान करता है।

1. कल्याणकारी राज्य की अवधारणा एवं विकास

कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का उद्भव मुख्यतः औद्योगिक क्रांति के पश्चात उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक असमानताओं और श्रमिक वर्ग के शोषण के प्रतिरोध के रूप में हुआ। प्रारंभिक चरण में राज्य की भूमिका सीमित थी और वह केवल कानून–व्यवस्था तथा सुरक्षा तक ही केंद्रित था, किंतु समय के साथ यह धारणा विकसित हुई कि राज्य को नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारने, सामाजिक न्याय स्थापित करने और आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए सक्रिय हस्तक्षेप करना चाहिए। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में यूरोप में सामाजिक सुरक्षा, श्रम कानूनों और सार्वजनिक सेवाओं के विस्तार ने कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को सुदृढ़ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यह अवधारणा और अधिक व्यापक हुई, जब विभिन्न देशों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा को राज्य की जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार किया। इस विकास क्रम में उदारवाद, समाजवाद और लोकतांत्रिक समाजवाद जैसे विचारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिन्होंने राज्य की भूमिका को केवल शासकीय संस्था से आगे बढ़ाकर एक कल्याणकारी और उत्तरदायी इकाई के रूप में स्थापित किया। भारतीय संदर्भ में भी यह अवधारणा संविधान के माध्यम से संस्थागत रूप में अपनाई गई, जहाँ राज्य को एक कल्याणकारी स्वरूप प्रदान करने का स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किया गया।

2. कार्ल मार्क्स का राज्य एवं कल्याणकारी दृष्टिकोण

कार्ल मार्क्स के अनुसार राज्य कोई तटस्थ या सर्वहितकारी संस्था नहीं है बल्कि यह ऐतिहासिक रूप से विकसित एक ऐसी संरचना है जो उत्पादन संबंधों और वर्गीय शक्ति–संतुलन से संचालित होती है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण में राज्य का मूल चरित्र शासक वर्ग के हितों की रक्षा करना है, विशेषकर पूंजीवादी व्यवस्था में यह पूंजीपति वर्ग का उपकरण बन जाता है। मार्क्स ने यह प्रतिपादित किया कि आर्थिक आधार (आधार संरचना) ही राज्य और अन्य संस्थाओं (अधिरचना) को निर्धारित करता है, अतः जब तक उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व बना रहेगा, तब तक राज्य की नीतियाँ भी उसी वर्ग के पक्ष में कार्य करेंगी जिसके हाथ में आर्थिक शक्ति निहित है। इस संदर्भ में, राज्य द्वारा लागू की जाने वाली कल्याणकारी नीतियाँ वास्तविक समानता स्थापित करने के बजाय सामाजिक असंतोष को नियंत्रित करने और पूंजीवादी व्यवस्था को स्थिर बनाए रखने का कार्य करती हैं।

मार्क्स के कल्याणकारी राज्य संबंधी दृष्टिकोण में यह स्पष्ट है कि वे इसे एक स्थायी समाधान के रूप में स्वीकार नहीं करते, बल्कि इसे पूंजीवाद की अंतर्विरोधी प्रकृति का अस्थायी प्रबंधन मानते हैं। उनके अनुसार, श्रमिक वर्ग को सीमित सुविधाएँ प्रदान कर राज्य वर्ग–संघर्ष की तीव्रता को कम करने का प्रयास करता है, जिससे व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावना घट जाती है। इस प्रकार कल्याणकारी राज्य को मार्क्स एक प्रकार के ''समझौते'' के रूप में देखते हैं, जो शोषण की मूल संरचना को बनाए रखते हुए केवल उसके प्रभावों को कम करता है। अतः मार्क्स के अनुसार वास्तविक समाधान तभी संभव है जब वर्गहीन समाज की स्थापना हो, जहाँ राज्य की आवश्यकता ही समाप्त हो जाए। इस दृष्टिकोण से कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर मार्क्स का विश्लेषण एक गहन आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जो इसकी सीमाओं और अंतर्विरोधों को उजागर करता है।

3. हेरोल्ड लास्की का कल्याणकारी राज्य का सिद्धांत

हेरोल्ड लास्की ने राज्य को एक ऐसी लोकतांत्रिक और उत्तरदायी संस्था के रूप में देखा, जिसका प्रमुख उद्देश्य नागरिकों के समग्र कल्याण को सुनिश्चित करना है। लास्की के विचारों में राज्य केवल कानून–व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह सामाजिक और आर्थिक न्याय की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभाता है। उनके अनुसार, वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है जब व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएँ प्राप्त हों। इस दृष्टि से लास्की ने उदारवाद की पारंपरिक सीमाओं को विस्तारित करते हुए राज्य के सकारात्मक हस्तक्षेप का समर्थन किया। वे मानते थे कि असमानता को केवल कानूनी समानता से समाप्त नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए राज्य को आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी हस्तक्षेप करना आवश्यक है जिससे सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्त हो सकें।

लास्की का दृष्टिकोण लोकतांत्रिक समाजवाद से प्रभावित था, जिसमें राज्य और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने पर बल दिया गया है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि राज्य को शक्तियों का केंद्रीकरण करने के बजाय

विकेंद्रीकरण और जनभागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि नीतियाँ अधिक उत्तरदायी और प्रभावी बन सकें। उनके अनुसार, कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता प्रदान करना नहीं, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ सामाजिक न्याय, समानता और मानव गरिमा की रक्षा हो। इस प्रकार, लास्की का सिद्धांत कल्याणकारी राज्य को एक व्यावहारिक और नैतिक आधार प्रदान करता है जो आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं, विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में, अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

4. मार्क्स एवं लास्की का तुलनात्मक सैद्धांतिक विश्लेषण

कार्ल मार्क्स और हेरोल्ड लास्की के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही राज्य और समाज के संबंध को समझने का प्रयास करते हैं, किंतु उनकी वैचारिक आधारभूमि और निष्कर्ष भिन्न हैं। मार्क्स का दृष्टिकोण ऐतिहासिक भौतिकवाद पर आधारित है जिसमें राज्य को आर्थिक संरचना का प्रतिबिंब और शासक वर्ग का उपकरण माना गया है, जबकि लास्की का दृष्टिकोण उदार–समाजवादी परंपरा से प्रेरित है, जिसमें राज्य को सामाजिक न्याय और समानता स्थापित करने वाली एक नैतिक एवं उत्तरदायी संस्था के रूप में देखा गया है। जहाँ मार्क्स के लिए कल्याणकारी राज्य पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्विरोधों को अस्थायी रूप से संतुलित करने का साधन है, वहीं लास्की के लिए यह लोकतांत्रिक व्यवस्था का आवश्यक अंग है जो नागरिकों के जीवन स्तर को उन्नत बनाने और अवसरों की समानता सुनिश्चित करने में सहायक होता है। इस प्रकार, दोनों विचारकों के बीच राज्य की प्रकृति, उद्देश्य और भूमिका को लेकर मूलभूत अंतर दृष्टिगोचर होता है।

इसके अतिरिक्त, दोनों के दृष्टिकोणों में समानता और स्वतंत्रता के संबंध को लेकर भी भिन्नता देखने को मिलती है। कार्ल मार्क्स के अनुसार, वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है जब आर्थिक असमानता का पूर्ण उन्मूलन हो और वर्गहीन समाज की स्थापना हो, जिसके लिए वे क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देते हैं। इसके विपरीत, हेरोल्ड लास्की क्रमिक सुधारों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से समानता और स्वतंत्रता के संतुलन को संभव मानते हैं। लास्की राज्य को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखते हैं जो नीतिगत हस्तक्षेप द्वारा सामाजिक विषमताओं को कम कर सकता है जबकि मार्क्स इस प्रकार के सुधारों को सतही मानते हैं और उन्हें मूल समस्या का समाधान नहीं मानते। फिर भी, दोनों दृष्टिकोणों में एक प्रकार की पूरकता भी देखी जा सकती है जहाँ मार्क्स का विश्लेषण कल्याणकारी राज्य की सीमाओं और अंतर्विरोधों को उजागर करता है, वहीं लास्की का दृष्टिकोण उसके व्यावहारिक और नैतिक औचित्य को स्थापित करता है।

इस प्रकार, तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को समझने के लिए इन दोनों विचारकों के दृष्टिकोणों का समन्वित अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

5. भारतीय संदर्भ में सैद्धांतिक ढांचे की प्रासंगिकता

भारतीय संदर्भ में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का विश्लेषण करते समय कार्ल मार्क्स और हेरोल्ड लास्की के सैद्धांतिक दृष्टिकोण विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होते हैं। भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात अपने संविधान में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय को मूल लक्ष्य के रूप में स्वीकार करते हुए एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना का मार्ग अपनाया। नीति निदेशक तत्वों के माध्यम से राज्य को यह दायित्व सौंपा गया कि वह समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान, संसाधनों के न्यायसंगत वितरण तथा जीवन स्तर में सुधार के लिए सक्रिय भूमिका निभाए। यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से लास्की के लोकतांत्रिक समाजवाद से प्रभावित प्रतीत होता है जहाँ राज्य को जनकल्याण का प्रमुख साधन माना गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित अनेक योजनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय राज्य ने कल्याणकारी स्वरूप को व्यवहार में लागू करने का प्रयास किया है।

किन्तु व्यावहारिक स्तर पर इन नीतियों के परिणामों का विश्लेषण करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि भारत में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा कई चुनौतियों और सीमाओं से घिरी हुई है। आर्थिक असमानता, क्षेत्रीय विषमताएँ, बेरोजगारी और सामाजिक विभाजन जैसी समस्याएँ अभी भी व्यापक रूप से विद्यमान हैं, जो कहीं न कहीं कार्ल मार्क्स की उस आलोचना को पुष्ट करती हैं कि राज्य अंततः शक्तिशाली वर्गों के हितों से प्रभावित होता है। साथ ही, प्रशासनिक अक्षमताएँ, भ्रष्टाचार और नीतियों के असमान क्रियान्वयन जैसी बाधाएँ कल्याणकारी योजनाओं की प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। इसके बावजूद, यह भी सत्य है कि कई क्षेत्रों में राज्य की सक्रिय भूमिका ने सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं जो हेरोल्ड लास्की के विचारों की प्रासंगिकता को दर्शाते हैं। इस प्रकार, भारतीय संदर्भ में सैद्धांतिक ढांचे का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि कल्याणकारी राज्य न तो पूर्णतः सफल है और न ही पूर्णतः असफल, बल्कि यह एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें मार्क्स की आलोचनात्मक दृष्टि और लास्की के व्यावहारिक दृष्टिकोण – दोनों का समन्वय आवश्यक है।

6. भारत में कल्याणकारी राज्य का व्यावहारिक विश्लेषण

भारत में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का व्यावहारिक स्वरूप मुख्यतः संविधान, नीतिगत प्रावधानों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने एक मिश्रित अर्थव्यवस्था और सामाजिक न्याय पर आधारित राज्य व्यवस्था को अपनाया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण

रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), सार्वजनिक वितरण प्रणाली, मध्यान्ह भोजन योजना तथा आयुष्मान भारत जैसी योजनाएँ राज्य के कल्याणकारी स्वरूप को दर्शाती हैं। इन पहलों ने विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित वर्गों के जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में हेरोल्ड लास्की का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है जहाँ राज्य को सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

हालाँकि, इन कल्याणकारी नीतियों के प्रभाव का समग्र मूल्यांकन करने पर कई अंतर्विरोध और चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। योजनाओं के क्रियान्वयन में भ्रष्टाचार, लाभार्थियों की पहचान में त्रुटियाँ, संसाधनों का असमान वितरण तथा प्रशासनिक अक्षमताएँ उनकी प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। इसके अतिरिक्त, आर्थिक उदारीकरण के बाद बाजार की भूमिका बढ़ने से राज्य की कल्याणकारी जिम्मेदारियों में आंशिक परिवर्तन भी देखने को मिला है जिससे सामाजिक असमानता के नए रूप उभरे हैं। यह स्थिति कार्ल मार्क्स के उस तर्क को आंशिक रूप से पुष्ट करती है कि राज्य की नीतियाँ अक्सर प्रभुत्वशाली वर्गों के हितों से प्रभावित होती हैं। इस प्रकार, भारत में कल्याणकारी राज्य का व्यावहारिक विश्लेषण यह दर्शाता है कि जहाँ एक ओर राज्य ने जनकल्याण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं, वहीं दूसरी ओर संरचनात्मक और प्रशासनिक बाधाएँ इसकी पूर्ण सफलता में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि कल्याणकारी राज्य की अवधारणा एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसे किसी एक वैचारिक दृष्टिकोण के माध्यम से पूर्णतः समझा नहीं जा सकता। कार्ल मार्क्स और हेरोल्ड लास्की के विचार इस संदर्भ में दो भिन्न लेकिन महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। मार्क्स का विश्लेषण कल्याणकारी राज्य की संरचनात्मक सीमाओं और उसके अंतर्विरोधों को उजागर करता है, जहाँ वे इसे पूंजीवादी व्यवस्था के संरक्षण का साधन मानते हैं। इसके विपरीत, लास्की का दृष्टिकोण राज्य की सकारात्मक और उत्तरदायी भूमिका पर बल देता है, जिसमें वह सामाजिक न्याय, समानता और नागरिकों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने का माध्यम बनता है। इन दोनों विचारों का तुलनात्मक अध्ययन यह संकेत देता है कि कल्याणकारी राज्य न तो पूर्णतः शोषणकारी उपकरण है और न ही पूरी तरह आदर्श जनकल्याणकारी संस्था बल्कि यह एक ऐसी व्यवस्था है जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

भारतीय संदर्भ में यह निष्कर्ष और अधिक प्रासंगिक हो जाता है जहाँ संविधान द्वारा स्थापित आदर्शों और व्यावहारिक क्रियान्वयन के बीच एक स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। भारत ने एक कल्याणकारी राज्य के रूप में अनेक महत्वपूर्ण नीतियाँ और योजनाएँ लागू की हैं, जिनसे समाज के वंचित वर्गों को लाभ पहुँचा है और सामाजिक विकास को गति मिली है। फिर भी, असमानता, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता और संसाधनों के असमान वितरण जैसी समस्याएँ इसकी प्रभावशीलता को सीमित करती हैं, जो कहीं न कहीं कार्ल मार्क्स की आलोचना को प्रासंगिक बनाती हैं। साथ ही, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में राज्य की सक्रिय भूमिका हेरोल्ड लास्की के विचारों की उपयोगिता को भी सिद्ध करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारत में कल्याणकारी राज्य एक निरंतर विकसित होती प्रक्रिया है, जिसकी सफलता के लिए न केवल नीतिगत सुधार आवश्यक हैं, बल्कि पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और समावेशी विकास की दिशा में ठोस प्रयास भी अनिवार्य हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कार्ल मार्क्स दृ दास कैपिटल (हिन्दी अनुवाद), प्रगति प्रकाशन, मॉस्को।
2. कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स दृ कम्युनिस्ट घोषणापत्र, प्रगति प्रकाशन।
3. हेरोल्ड लास्की दृ राजनीति का व्याकरण (Grammar of Politics), हिन्दी अनुवाद।
4. हेरोल्ड लास्की दृ राज्य और सरकार के सिद्धांत, हिन्दी संस्करण।
5. डी.डी. बसु दृ भारत का संविधानः एक परिचय, लेक्सिसनेक्सिस।
6. वी.डी. महाजन दृ राजनीति विज्ञान के सिद्धांत, एस. चंद प्रकाशन।
7. ओ.पी. गाबा दृ राजनीति विज्ञान का परिचय, मयूर पेपरबैक्स।
8. ए.सी. कपूर दृ राजनीति विज्ञान के सिद्धांत, एस. चंद।
9. राम आहूजा दृ भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन।
10. एम. लक्ष्मीकांत दृ भारतीय राजव्यवस्था, मैकग्रा हिल।
11. बी.एल. फाड़िया दृ भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन।
12. सुभाष कश्यप दृ भारतीय संविधान का विकास और स्वरूप, नेशनल बुक ट्रस्ट।
13. राजनी कोठारी दृ भारत में राजनीति, ओरिएंट ब्लैकस्वान।
14. ए.आर. देसाई दृ भारतीय राष्ट्रवाद का सामाजिक आधार, पॉपुलर प्रकाशन।
15. अमर्त्य सेन दृ विकास के रूप में स्वतंत्रता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (हिन्दी)।
16. जीन द्रेज एवं अमर्त्य सेन दृ भारत विकास और सहभागिता, ऑक्सफोर्ड।
17. भारत सरकार दृ आर्थिक सर्वेक्षण (विभिन्न वर्ष)।
18. भारत सरकार दृ पंचवर्षीय योजनाएँ एवं नीति दस्तावेज।
19. नीति आयोग दृ भारत में समावेशी विकास रिपोर्ट।

20. योजना आयोग दृ कल्याणकारी योजनाओं पर रिपोर्ट।
21. भारतीय संविधान दृ भारत सरकार प्रकाशन।
22. यूजीसी दृ अनुसंधान एवं प्रकाशन नैतिकता सामग्री।